ʿसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । सुगमं । वेउव्विय-आहारतिगमोघं ⅃

ʿमणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियतिगस्स मणुसपज्जत्तभंगो ⅃

ʿसंजदेसु ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं सव्वत्थोवा परिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियआहारतिगस्स मणुसपज्जत्तभंगो । एवं सामाइयछेदोवट्ठावणसुध्दिसंजदाणं । णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि । परिहारसुध्दिसंजद-सुहुमसांपराइयसुध्दिसंजदेसु णत्थि अप्पाबहुगं, तत्थ वेउव्विय-आहारतिगाभावेण एगपदत्तादो । संजदासंजदेसु ओरालियदोण्णं पदाणं विभंगभंगो । वेउव्वियतिण्णिपदाणं तिरिक्खभंगो ⅃

ʿचक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो । अचक्खुदंसणी ओघं । णवरि तेजा-कम्मइय-परिसादणकदी णत्थि । ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो । किण्ण-णील-काउलेस्सिएसु ओरालियतिगमोघं ⅃

< वाले पाये जाते हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इसका कारण सुगम है । वैक्रियिक और आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । >

< मन:पर्ययज्ञानियोंमें औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक है । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा मनुष्य पर्याप्तोंके समान है । >

< संयतोंमें औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । वैक्रियिक और आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा मनुष्य पर्याप्तोंके समान है । इसी प्रकार सामायिक-छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयतोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । >

< परिहारशुध्दिसंयत और सूक्ष्मसांपरायिकशुध्दिसंयतोंमें अल्पबहुत्व नहीं है । क्योंकि, उनमें वैक्रियिक और आहारकशरीरके तीनों पदोंका अभाव होनेसे औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरका संघातन-परिशातन रूप केवल एक पद होता है । संयतासंयतोंमें

औदारिकशरीरके दो पदोंकी प्ररूपणा विभंगज्ञानियोंके समान है । वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा तिर्यंचोंके समान है । >

< चक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा त्रस पर्याप्तोंके समान है । अचक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । अवधिदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है । >

< कृष्ण, नील, और कापोत लेश्यावाले जीवोंमें औदारिकशरीरके तीनों पदोंकी >

कदिअणियोगद्दारे करणकदिपरूवणा

ʿवेउव्वियसरीरस्स सव्वत्थोवा परिसादणकदी । संघादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेउलेस्सिएसु ओरालियतिण्णिपदाणमाहारतिण्णिपदाणं च आभिणिबोहियभंगो । वेउव्वियतिण्णिपदाणं विभंगभंगो । एवं पम्माए । णवरि (१ प्रतिषु एवं पमाणेण णवरि इति पाठः।) वेउव्विय-तिण्णिपदाणं तिरिक्खभंगो, सणक्कुमार-माहिंददेवेहिंतो तिरिक्खपम्मलेस्सियजीवाणं पदरस्स असंखेज्जदिभागाणं पाहण्णियादो । सुक्काए सगपव्वपदाणं तेउलेस्सियभंगो । भवसिध्दियाणं ओघभंगो ।ʾ

ʿसम्माइट्ठीणमाभिणिबोहियभंगो । णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणं तसभंगो । वेदगसम्मादिट्ठीणं आभिणिबोहियभंगो । खइयसम्मादिट्ठीसु सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्विय-संघादणकदी, संखेज्जत्तादो एगसमयसंचिदत्तादो । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, अन्तोमुहुत्तसंचिदासंखेज्जरासित्तादो । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । सुगमं । आहार-तेजा-कम्मइयपदाणं सम्माइट्ठिभंगो ।ʾ

< प्ररूपणा ओघके समान है । वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उसकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । >

< तेजलेश्यावाले जीवोंमें औदारिकशरीरके तीनों पद तथा आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है । वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा विभंगज्ञ ानियोंके समान है । इसी प्रकार पद्मलेश्यावाले जीवोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उनमें वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा तिर्यंचोंके समान है, क्योंकि, सानत्कुमार और

माहेन्द्रकल्पके देवोंकी अपेक्षा यहां जगप्रतरके असंख्यातवें भाग मात्र तिर्यंच पद्मलेश्यावाले जीवोंकी प्रधानता है ।>

< शुक्ललेश्यामें अपने सब पदोंकी प्ररूपणा तेजलेश्यावाले जीवोंके समान है । भवसिध्दिक जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ।>

< सम्यग्दृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरके दोनों पदोंकी प्ररूपणा त्रस जीवोंके समान है । वेदकसम्यग्दृष्टियोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है ।>

< क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिक व वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे संख्यात व एक समय संचित हैं । इनसे उनकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्त संचित असंख्यात राशि रूप हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । कारण इसका सुगम हैं । आहारक, तैजस और कार्मणशरीरके पदोंकी प्ररूपणा सम्यग्दृष्टियोंके समान है ।>

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

'उवसमसम्माइट्ठीसु ओरालियदोपदाणं संजदासंजदभंगो । वेउव्वियतिण्णिपदाणं खइयसम्माइट्ठिभंगो । एवं सम्मामिच्छाइट्ठीणं । सासणे सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्वियपरि-सादणकदी । संघादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा ।'

'सण्णीणं पुरिसभंगो । आहारएसु ओघं । णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि । अणाहारएसु सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी अणंतगुणा । एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।'

'परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियसंघादणकदी

< उपशमसम्यग्दृष्टियोंमे औदारिकशरीरकेदो पदोंकी प्ररूपणा संयतासंयतोंकेसमान है । वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंके समान है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंकेकहना चाहिये । >

< सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिक और वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उनकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । >

< संज्ञी जीवोंकी प्ररूपणा पुरुषवेदियोंके समान है । आहारक जीवोंमें अपने पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । अनाहारक जीवोंमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ । >

< परस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है । आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे इसकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असख्यांतगुणे हैं । उनसे औदारिक- >

‘अणंतगुणा । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? वेउव्विय-आहारतिण्णिपदसहिदओरालियसंघादण-कम्मइयमेत्तो ।’

‘आदेसेण णेरइएसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । एवं सव्वणेरइय-सव्वदेवेसु । णवरि सव्वट्ठे सखेज्जगुणं कायव्वं ।’

ʿतिरिक्खेसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वेउव्वियसंघादणमेत्तेण । संघादणकदी अणंतगुणा । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्ज–

< शरीरकी संघातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है । >

ʿशंका–< वह विशेष कितना हैं ? >

ʿसमाधान–< वह विशेष वैक्रियिक व आहारकशरीरके तीन पदसहित औदारिकशरीरकी संघातनकृतिवाले जीवोंका प्रमाण कार्मणशरीरके जीवोंकी बराबर है । >

< आदेशकी अपेक्षा नारकियोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे इसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार सब नारकियों और सब देवोंमें कहना चाहिये । विशेष कहना है कि सर्वार्थसिध्दि विमानमें संख्यातगुणा करना चाहिये । >

< तिर्यंचोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

ʿशंका–< कितने मात्र विशेषसे अधिक हैं ? >

ʿसमाधान–< वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीवों मात्र विशेषसे वे अधिक हैं । >

< औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीवोंसे उसकी संघातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं । उनसे इसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʿगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया । पंचिंदियतिरिक्खतिगस्स । णवरि जम्हि अणंतगुणं तम्हि असंखेज्जगुणमिदि वत्तव्वं । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेसु सव्वत्थोवा

ओरालियसंघादणकदी । संघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइय-संघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया ।

‘मणुसेसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया । एवं मणुसपज्जत्तस्स वि । णवरि जम्हि असंखेज्जगुणं तम्हि संखेज्जगुणं कादव्वं । मणुसिणीसु सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी । वेउव्वियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । परिसादणकदी

< उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< इसी प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि तीनके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि जहांपर अनन्तगुणा कहा है वहांपर असंख्यातगुणा ऐसा कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है । >

< मनुष्योंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्तकके भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि जहां असंख्यातगुणा है वहां संख्यातगुणा करना चाहिये । >

< मनुष्यनियोंमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे >

ʻसंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्तभंगो ।ॱ

ʻएइंदिय-बादरेइंदियाणं तेसिं पज्जत्ताणं च तिरिक्खोघं । बादरेइंदियअपज्जत्त-सव्वसुहु-म-सव्वविगलिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्त-सव्वपुढवीकाइय-सव्वआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयअपज्जत्त-सव्वसुहुमतेउकाइय-वाउकाइय-सव्ववणप्फदि-सव्वणिगोद-सव्ववणप्फदिपत्तेयसरीर-तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो । पंचिंदियाणं ओघं । णवरि जम्हि अणंतगुणं तम्हि असंखेज्जगुणं कायव्वं । अधवा, वेउव्वियसंघादणादो ओरालियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा ।ॱ

ʻपंचिंदियअपज्जत्तएसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा ।ॱ

< उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातनकृतियुक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे संघातन-परिशातनकृतिवाले जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है । >

< एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्तोंकी प्ररूपणा तिर्यंच ओघके समान है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सब सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सब विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, सब पृथिवीकायिक, सब जलकायिक, बादर तेजकायिक व बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सब सूक्ष्म तेजकायिक, सब सूक्ष्म वायुकायिक, सब वनस्पतिकायिक, सब निगोद, सब वनस्पति-कायिक प्रत्येकशरीर तथा त्रस अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है । पंचेन्द्रियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि जहांपर अनन्तगुणा है वहांपर असंख्यातगुणा करना चाहिये । अथवा, उनमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीवोंसे

औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । >

< पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परि- >

ʿसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा। ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्विय-संघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियसंघादणपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया ˩

ʿतेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयतेसिंपज्जत्ताणं पंचिंदि-तिरिक्खभंगो । तसदुगस्स पंचिंदियदुगभंगो ˩

ʿपंचमणजोगि तिण्णिवचिजोगीसु सव्वत्थोवा आहारपरिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादण-कदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ˩

< शातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यात गुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< तेजकायिक, वायुकायिक, बादर तेजकायिक और बादर वायुकायिक तथा उन सबके पर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके समान है । त्रस और त्रस पर्याप्तोंकी प्ररूपणा क्रमशः पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंकेसमान है । >

< पांच मनयोगी और तीन वचनयोगी जीवोंमें आहारकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< १ प्रतिषु तेउ० इति पाठः । >

कदिअणियोगद्दारे करणकदिपरूवणा

ʿवचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु सव्वत्थोवा आहारपरिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालिय-परिसादणकदी विसेसाहिया । वेउव्वियसंघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालिय-संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ⁄

ʿकायजोगी ओघं । णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि । ओरालियकायजोगीसु सव्वत्थोवा आहारपरिसादणकदी । वेउव्वियसंघादणमसंखेज्जगुणं । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादण-परिसादणकदी अणंतगुणा । तेजा-कम्मइय-संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियमिस्सकायजोगीसु पंचिंदियअपज्जत्तभंगो । वेउव्वियकायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुगं, तिण्णिपदाणं सारिच्छियादो । वेउव्विय-मिस्सकायजोगीणं णारगभंगो ⁄

ʿआहारकायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुगं, चदुण्हं पदाणं सारिच्छियादो । आहरमिस्स-कायजोगीसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । संघादण परिसादणकदी संखेज्जगुणा । ओरा⁄

< वचनकाययोगी और असत्य-मृषावचनयोगी जीवोंमें आहारकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे इसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघतान-परिशातनकृति युक्त जीव

संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।>

< काययोगी जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । औदारिककाययोगियोंमें आहारकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें अपने पदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है । वैक्रियिककाययोगियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, उनमें तीनों पद सदृश्य हैं । वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी प्ररूपणा नारकियोंके समान है ।>

< आहारककाययोगियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, उनमें चारों पद समान हैं । आहारकमिश्रकाययोगियोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

‘लियपरिसादणकदी तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी तिण्णि वि सरिसा विसेसाहिया ’

‘कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी अणंतगुणा ’

‘इत्थिवेदेसु सव्वत्थोवा वेउव्वियपरिसादणकदी । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया ’

‘पुरिसवेदेसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । वेउव्वियपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । सेसस्स इत्थिवेदभंगो । णउंसयवेदा तिरिक्खोघं ’

ʻअवगदवेदेसु सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी । ओरालियपरिसादणकदी˩
< परिशातनकृति तथा तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति, इन तीनों पदोंसे युक्त जीव सदृश विशेष अधिक हैं । >

< कार्मणकाययोगियोंमें औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं । >

< स्त्रीवेदियोंमें वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< पुरूषवेदियोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । शेष पदोंकी प्ररूपणा स्त्रीवेदियोंकेसमान है । नपुंसकवेदियोंकी प्ररूपणा सामान्य तिर्यंचोंकेसमान है । >

< अपगतवेदियोंमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे >

ʻविसेसाहिया । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । चदुण्हं कसायाणं कायजोगिभंगो । अकसाईणमवगदवेदभंगो ˩

ʻमदि-सुदअण्णाणीसु सव्वत्थोवा वेउव्वियपरिसादणकदी । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । सेसपदा ओघं । विभंगणाणीसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादणपरिसादण-कदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया ˩

ʽआभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया ।ʽ

< उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । चार कषाय युक्त जीवोंकी प्ररूपणा काययोगियोंके समान है । अकषायी जीवोंकी प्ररूपणा अपगतवेदियोंके समान है । >

< मति व श्रुत अज्ञानी जीवोंमें वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । शेष पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । >

< विभंगज्ञानियोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< आभिनिबोधिक, श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे इसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे इसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिक-शरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातन-कृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष >

ʽवेउव्वियसंघादणकदी (१ इत प्रारभ्य विसेसाहिया-पर्यन्तोऽयमधस्तन: प्रबन्ध: काप्रतौ नोपलभ्यते ।) असंखेज्जगुणा । ओरालियसंघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया ।ʽ

ʿमणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्ज-गुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदी विसेसाहिया ।⌞

ʿकेवलणाणीणमवगदवेदभंगो । एवं केवलदंसणि (२ प्रतिषु 'दंसणीओ' इति पाठः।)-जहाक्खादसंजदाणं । संजदाणं मणुसपज्जत्तभंगो । णवरि ओरालियसंघादणं णत्थि । एवं सामाइय-छेदोवट्ठावणसुध्दि-संजदाणं । णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि । परिहारसुध्दिसंजद-सुहुमसां-पराइयसुध्दिसंजदेसु तिण्णि वि पदा सरिसा । संजदासंजदाणं मणपज्जवभंगो । णवरि विसेसो⌞

< अधिक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< मनःपर्ययज्ञानियोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< केवलज्ञानी जीवोंकी प्ररूपणा अपगतवेदियोंके समान है । इसी प्रकार केवलदर्शनी और यथाख्यातसंयत जीवोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । संयत जीवोंकी प्ररूपणा मनुष्य पर्याप्तोंके समान है । विशेष इतना है कि उनमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति नहीं होती । इसी प्रकार सामायिक-छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयत जीवोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । परिहारशुध्दिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयत जीवोंमें तीनों ही पद सदृश हैं । संयतासंयत जीवोंकी प्ररूपणा मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है । विशेष इतना है कि जहां संख्यात- >

कदिअणियोगद्दारे करणकदिपरूवणा

ʻजम्हि संखेज्जगुणं तम्हि असंखेज्जगुणं कायव्वं । असंजदाणं मदिअण्णाणिभंगो ‚

ʻचक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो । अचक्खुदंसणीणं कोधभंगो । ओहिदंसणीणं ओहिणाणिभंगो । किण्ण-णील-काउलेस्सियाणं असंदभंगो । तेउलेस्सिएसु (१ प्रतिषु ‘वेउ०’ इति पाठः ।) सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ‚

ʻपम्मलेस्सिएसु (२ प्रतिषु ‘पम्मलेस्सीसु’ इति पाठः ।) सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण‐

< गुणा कहा गया है वहां असंख्यातगुणा करना चाहिये । असंयत जीवोंकी प्ररूपणा मतिअज्ञानियोंके समान है । >

< चक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा त्रस पर्याप्तोंके समान है । अचक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा क्र्रोधकषायी जीवोंके समान है । अवधिदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है । कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले जीवोंकी प्ररूपणा असंयत जीवोंके समान है । तेजलेश्यावालोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< पद्मलेश्यावाले जीवोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

ʿकदी असंखेज्जगुणा । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसा-हिया । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ।ʾ

ʿसुक्कलेस्सिएसु आहारतिगमोघं । तदो ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालिय-परिसादणकदी विसेसाहिया । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ।ʾ

ʿभवसिध्दिया ओघं । अभवसिध्दियाणं मदिअण्णाणिभंगो ।ʾ

ʿसम्मत्ताणुवादेण सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । ओरालिय-

< उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उससे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< भव्यसिध्दिक जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । अभव्यसिध्दिक जीवोंकी प्ररूपणा मतिअज्ञानियोंके समान है । >

< सम्यक्त्वमार्गणानुसार आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातन-कृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यात- >

ʿसंघादणकदी संखेज्जगुणा । सेसस्स आभिणिबोहियभंगो ⁄

ʿखइयसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी संखेज्जगुणा । ओरालियसंघादणकदी संखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ⁄

ʿउवसमसम्माइट्ठीणं विभंगभंगो । सासणे सव्वत्थोवा वेउव्वियपरिसादणकदी । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ⁄

ʿमिच्छादिट्ठीणं मदिअण्णाणि भंगो । वेदगसम्मादिट्ठीणमोहिभंगो । सम्मामिच्छाइट्ठीसु

< गुणे हैं । शेष पदोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है । >

< क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी

परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा विभंगज्ञानियोंके समान है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । >

< मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा मतिअज्ञानियोंके समान है । वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातन- >

छक्खंडागमे वेयणाखंडं

˹सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । ओरालियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसंघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया ˼

˹सण्णीसु पुरिसभंगो । असण्णी तिरिक्खोघं । आहारीणं कायजोगिभंगो । अणाहारएसु सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी । ओरालियपरिसादणकदी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी अणंतगुणा । एवं परत्थाणप्पाबहुगं समत्तं । इदि मूलकरणकदी परूवणा कदा ˼

˹जा सा उत्तरकरणकदी णाम सा अणेयविहा । तं जहा-असि-वासि-परसु-कुडारि-चक्क-दंड-वेम-णालिया-सलाग-मट्टियसुत्तोदयादीण-मुवसंपदसण्णिज्झे ।। ७२ ।˼

˹कधं मट्टियादीणमुत्तरकरणत्तं ? पंचसरीराणं जीवादो अपुधब्भूदत्तेण सकलकरणकारण˼

< कृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे

औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।>

< संज्ञी जीवोंकी प्ररूपणा पुरूषवेदियोंके समान है । असंज्ञी जीवोंकी प्ररूपणा तिर्यंच ओघके समान है । आहारक जीवोंकी प्ररूपणा काययोगियोंके समान है । अनाहारक जीवोंमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार परस्थानअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।>

< इस प्रकार मूलकरणकृतिकी प्ररूपणा की गई है ।>

< जो वह उत्तरकरणकृति है वह अनेक प्रकारकी है । यथा - असि, वासि, परशु, कुदारी, चक्र, दण्ड, वेम, नालिका, शलाका, मृत्तिका, सूत्र और उदकादिकका सामीप्य कार्योंमें होता है ।। ७२ ।।>

‘शंका-< मृत्तिका आदि उत्तरकरण किस प्रकार है ? >

‘समाधान-< जीवसे अपृथक् होनेके कारण अथवा समस्त करणोंके कारण होनेसे >

कदिअणियोगद्दारे भावकदिपरूवणा

‘भावेण वा उवलध्दमूलकरणववएसाणं करणत्तादो । उत्तरकरणकदी अणेयविहा त्ति पइज्जा । असि-वासियादीणमुवसंपदसण्णिज्झे इदि साहणमेयमण्णहाणुववत्तिगब्भत्तादो । द्रव्यमुपसंपद्यते आश्रीयते एभिरिति उपसंपदानि कार्याणि, तेषां सान्निध्यं उपसंपद-सान्निध्यम् । तस्मादसि-वासि-परशु-कुडारि-चक्र-दण्ड-वेम-नालिका-शलाका-मृत्तिका-सूत्रोदकादीनामुपसंपदसान्निध्यादुत्तरकरणकृतिरनेक विधा । न कार्यसान्निध्यं करणभेदस्यागमकम्, तद्विशेषाश्रयणे तदेकत्वानुपपत्तेः ।

‘जे चामण्णे एवमादिया सा सव्वा उत्तरकरणकदी णाम ।। ७३ ।।

‘‘जे च अमी अण्णे’ एदेण करणाणमियत्तावहारणप्पडिसेहो कदो । सा सव्वा उत्तरकरणकदी णाम ।

‘जा सा भावकदी णाम सा उवजुत्तो पाहुडजाणगो ।। ७४ ।।

ʻएत्थ पाहुडसद्दो कदीए विसेसिदव्वो, पाहुडसामण्णेण अहियाराभावादो । तदो कदिपाहुडजाणओ उवजुत्तो भावकदि त्ति सिध्दं । णोआगमभावकदी किण्ण परूविदा ? ण,ॱ
< मूलकरण संज्ञाको प्राप्त हुए पांच शरीरके चूंकि वे मृत्तिका आदि करण हैं, अत: वे उत्तर करण कहे जाते हैं । >

< ‘उत्तरकरणकृत्ति अनेक प्रकारकी है’ यह प्रतिज्ञा है । ‘आसि, वासि आदिकोंकी कार्योंमें समीपता होनेपर,’ यह साधन है; क्योंकि, उसके गर्भमें अन्यथानुपपत्ति निहित है अर्थात् उक्त साधनोंके विना कार्यकी सिध्दि नहीं हो सकती । जो द्रव्यका आश्रय करते हैं वे उपसंपद अर्थात् कार्य कहलाते हैं, उनकी समीपता उपसंपदसानिध्य है । इसकारण असि, वासि, परशु, कुदारी, चक्र दण्ड, वेम, नालिका, शलाका, मृत्तिका, सूत्र और उदक आदि कार्योंकी समीपतासे उत्तरकरणकृति कहलाते हैं । यह उत्तरकरणकृति अनेक प्रकारकी है । कार्यसानिध्य करणभेदका अगमक नहीं है अर्थात् गम ही है; क्योंकि, करणभेदका आश्रय करनेपर उसका एकत्व नहीं बन सकता । >

< इसी प्रकार और भी जो ये अन्य कारण हैं वे सब उत्तरकरणकृति कहलाते हैं ।। ७३ ।। >

< ‘और जो ये अन्य हैं,’ इससे करणोंकी संख्याके निश्चयका निषेध किया गया है । वह सब उत्तरकरणकृति है । >

< प्राभृत्तका जानकार जो उपयोग युक्त जीव है वह सब भावकरणकृति है ।। ७४ ।। >

< यहां सूत्रमें आये हुए प्राभृत पदको कृति विशेषणसे विशेषित करना चाहिये, क्योंकि, यहां प्राभृत सामान्यका अधिकार नहीं है । इस कारण कृतिप्राभृतका जानकर उपयोग सहित जीव भावकृति है, यह सिध्द हुआ । >

ʻशंकाॱ< यहां नोआगमभावकृतिकी प्ररूपणा क्यों नहीं की ? >

ʿओदइयादिपंचभाउवलक्खियणोआगमदव्वाणं सेसकदीसु अंतब्भावादो ।

ʿसा सव्वा भावकदी णाम ।। ७५ ।।

ʿकधमेक्किस्से भावकदीए बहुत्तसंभवो ? ण, कदिपाहुडजाणएसु तत्थुवजुत्तजीवाणं बहुत्तदंसणादो ।

ʿएदासिं कदीणं काए कदीए पयदं ? गणणकदीए पयदं ।। ७६ ।।

ʿगणणपरूवणा किमट्ठमेत्थ कीरदे ? गणणाए विणा सेसाणियोगद्दारपरूवणाणु-ववत्तीदो । उत्तं च -

ʿजह चिय मोराण सिहा णायाणं लंछणं व सत्थाणं ।

ʿमुक्खारूढं गणियं तत्थब्भासं तदो कुज्जा ।। १३३ ।।

ʿएवं कदी त्ति सत्तमणियोगद्दारं ।

ʿप्रसिध्दसिध्दान्तगभस्तिमाली समस्तवैयाकरणाधिराज: ।

ʿगुणाकरस्तार्क्किकचक्रवर्ती प्रवादिसिंहो वरवीरसेन: ।।

ʿसमाधान-< नहीं की गई, क्योंकि, औदयिक आदि पांच भावोंसे उपलक्षित नोआगमद्रव्योंका शेष कृतियोंमें अन्तर्भाव हो जाता है । >

< वह सब भावकृति है ।। ७५ ।। >

ʿशंका-< एक भावकृतिमें बहुत्व कैसे संभव है ? >

ʿसमाधान-< नही, क्योंकि, कृतिप्राभृतके जानकारोंमेंसे उसमें उपयोग युक्त जीव बहुत देखे जाते हैं । >

< इन कृतियोंमें कौनसी कृति प्रकृत है ? गणनकृति प्रकृत है ।। ७६ ।। >

ʿशंका-< यहां गणनाकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है ? >

ʿसमाधान-< चूंकि गणनाके विना शेष अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है, अत: उसकी प्ररूपणा की जाती है । कहा भी है - >

< जिस प्रकार मयूरोंकी शिखा उनका मुख्यतासे रूढ लक्षण है, उसी प्रकार न्याय शास्त्रोंका मुख्य लक्षण गणित है । अतएव इसका अभ्यास करना चाहिये ।। १३३ ।। >

< इस प्रकार कृतिअनुयोगद्वार समाप्त हुआ । >